देश-देश की लोक कथाएँ

राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभागों द्वारा लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत

देश-देश की लोक कथाएँ

सन्तराम वत्स्य

सन्मार्ग प्रकाशन
१६, यू० बी० बैंगलो रोड, दिल्ली

सन् १९६९

मूल्य : एक रुपया

SANMARG PARKASHAN
1.50
REVISED PRICE
DELHI.

क्रम

कहानी	देश	पृ०
१. किस्मत के कड़छे	[इंगलैण्ड]	३
२. सबको बुद्धू बनाया	[डेन्मार्क]	८
३. बंगाल का जादू	[भारत]	१४
४. युक्ति से मुक्ति	[रूस]	२१
५. राजा का चेहरा	[इटली [	२६
६. यह भी खूब रही	[कोरिया]	२९

मुद्रक :—हरिहर प्रेस, चावड़ी बाजार दिल्ली-६

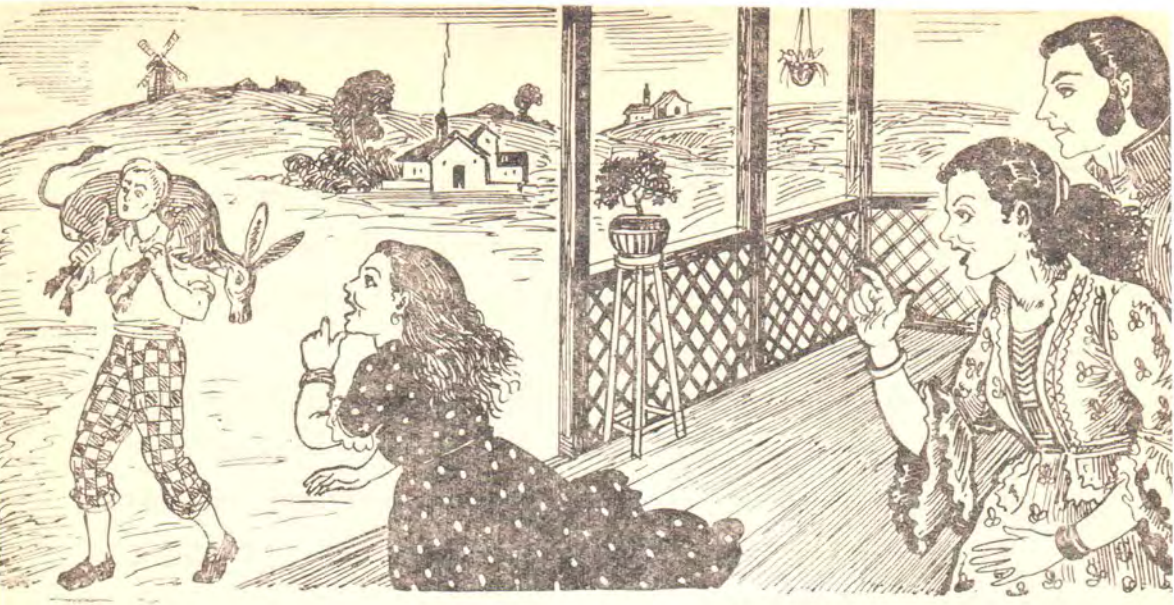

किस्मत के कड़छे

जैक नाम का एक लड़का था। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। घर में वह और उसकी माँ दो ही आदमी थे। जैक के पिता का बनाया हुआ गुजारे-लायक मकान तो अपना ही था, पर खाने-पहनने की काफी तंगी थी। किसी तरह दिन कट रहे थे, बरसात में मकान की छत गिर पड़ी। कठिनाई में कहीं एक जून आधपेट रोटी मिलती थी, फिर मकान की मरम्मत कौन करवाता और कैसे करवाता ?

जैक की माँ बेचारी गाँव वालों का सूत कातती और उससे जो कुछ मिल जाता, उसी से माँ-बेटा गुजर-बसर करते। जैक वैसे तो अब कुछ कमाने लायक हो गया था, पर वह था पक्का आलसी। काम करने का नाम न लेता। जिस दिन धूप होती, वह दिन भर बैठा धूप सेंकता। और अगर बादल या वर्षा होती तो दिन भर चूल्हे के पास बैठा आग सेंकता। मतलब यह कि दिन भर धूप सेंकता या आग सेंकता। और कोई काम नहीं करता था। इसी लिए गाँव भर के लोग उसे 'आलसी जैक' कह कर पुकारते थे।

एक दिन उसके इस आलसीपन से तंग आकर उसको माँ ने कहा—"बेटा जैक ! इस तरह कब तक कटेगी। अब तुम स्याने हो गए हो। देखते नहीं हो,

कि तुम्हारी उम्र के दूसरे लड़के कितना कमा लाते हैं। मुझसे अब यह गाड़ी ज्यादा दिन नहीं खींची जायेगी। तुम भी कुछ कमाओ, ताकि भरपेट रोटी तो मिले, आखिर मैं ही कब तक तुम्हें कमाकर खिलाती रहूँगी। बूढ़ी हो गई हूँ। क्या मालूम किस दिन दम निकल जाय।

दूसरे दिन जैक दुपहर की रोटी बाँधकर काम की तलाश में निकल पड़ा। वह किसान के पास गया और उससे कुछ काम देने को कहा। किसान ने उसे अपने साथ काम में लगा लिया। वह दिन भर खूब काम करता रहा। शाम को छुट्टी का समय हुआ, तो किसान ने उसे मजदूरी में एक पेनी (एक आने के बराबर का अंग्रेजी सिक्का) दी।

आज जैक की खुशी का ठिकाना नहीं था। आखिर उसने अपने हाथ-पैर हिलाकर एक पैनी कमाली थी। वह सोच रहा था—"देखूँगा, अब मुझे कोई आलसी कैसे कहता है? और मां, आज बहुत खुश होगी।" वह जल्दी-जल्दी पग उठाता जा रहा था। आज तो सचमुच उसमें आलस्य का नाम तक न था। मजदूरी की एक पेनी उसके हाथ में थी। और वह मारे खुशी के उसे उछालता जा रहा था।

रास्ते में एक नाला पड़ता था। उसे पार करते समय गरीब की यह दिन भर की कमाई 'पेनी'—पानी में जा गिरी। अब क्या करता? बेचारा मुँह लटकाये घर की ओर चल पड़ा। कदमों में अब तेजी नहीं थी। सारी खुशी काफूर हो गई। अब वह माँ को क्या कहकर मुँह दिखाएगा।

जब वह घर पहुँचा और सारी बात मां को सुनाई तो माँ ने कहा—"तुम भी कितने नासमझ हो। भला उसे हाथ में क्यों रखा था। जेब किस लिए होती है। उसमें डालते तो कैसे गिर जाती? खैर, आगे ध्यान रखना।"

"माँ, अब की माफ कर दो, आगे को ऐसा ही करूँगा।" जैकने जवाब दिया।

दूसरे दिन वह फिर काम की तलाश में निकला तो उसे एक ग्वाले के पास काम मिल गया। शाम को ग्वाले ने उसे मजदूरी का दूध दे दिया। जैक

ने बिना सोचे-समझे दूध के बर्तन को अपनी कोट की जेब में रख लिया और घर की ओर चल पड़ा। छलक-छलक कर सारा दूध रास्ते में गिरता रहा। जब तक वह घर पहुँचा बर्तन खाली हो चुका था।

माँ ने सारी बात सुनी तो जल-भुन गई। कहने लगी—"तुम भी निरे बुद्धू हो। दूध के बर्तन को तो सिर पर उठाकर लाना चाहिए था।"

"बहुत अच्छा" जैक ने कहा—"आगे कभी गलती नहीं करूँगा।"

तीसरे दिन वह फिर पहले वाले किसान के पास पहुँचा। किसान दिन भर उससे काम करवाता रहा। शाम को उसने मजदूरी के बदले कुछ मक्खन दे दिया। जैक को पेनो के बदले मक्खन का मिलना कुछ अच्छा तो नहीं लगा, पर वह कुछ बोला नहीं। चुपचाप घर की ओर चल पड़ा।

इस बार उसने मक्खन को सिर पर रख लिया क्योंकि पिछले दिन ही तो माँ ने कहा था कि दूध के बर्तन को सिर पर रखकर लाना चाहिए था। सारे का सारा मक्खन नष्ट हो गया। उसमें से कुछ तो गिर गया और बाकी पिघल कर जैक के सिर के बालों में जा लगा। वह घर पहुँचा, तो फिर हाथ खाली के खाली। माँ ने सारी बात सुनी तो बहुत गुस्सा आया। आज जैक को रोज से ज्यादा झाड़ खानी पड़ी—"बेवकूफ, बुद्धू, उजड्ड, गधा।" माँ ने उसके कई नाम गिना दिए। फिर कहने लगी—"तुम हमेशा गलत तरीके से चीजों को लाते हो। कितनी बार समझाया पर, याद ही नहीं रखते। तुम्हें उसे संभाल कर हाथ में लाना चाहिए था।"

"अच्छा माँ जो हुआ सो हुआ, अब कभी नहीं भूलूँगा।" जैक बोला।

अगले दिन वह काम ढूँढता हुआ एक बेकरी (जहाँ डबल रोटियाँ बनती हैं) में पहुँचा। दिन भर खूब काम करता रहा। बेकरी के मालिक ने एक बिल्ली पाल रखी थी। पर अब वह उसे नहीं रखना चाहता था। जैक को वह बहुत अच्छी लगी। उसने दिन-भर की मजूरी के बदले बिल्ली माँगी। मालिक तो आगे ही उसे निकालने को तैयार था। उसने खुशी-खुशी बिल्ली जैक के हवाले करदी।

जैक ने उसे दोनों हाथों में पकड़ा और घर को राह ली। उसे कल की माँ की बात याद थी कि चीजों को सम्भालकर हाथ में लाना चाहिए। पर बिल्ली तो बिल्ली ठहरी, उसने अपने तीखे नाखूनों से जैक के हाथों को बुरी तरह खरोंच डाला और मौका पाकर छूटकर भाग निकली। जैक बेचारा फिर खाली का खाली माँ के पास जा खड़ा हुआ। माँ को देने के लिए उसके हाथों में फिर कुछ नहीं था। उसने रोते हुए बिल्ली की कहानी माँ को सुनादी। खून से लथपथ हाथ भी आगे कर दिए। माँ को उस पर गुस्सा तो बहुत आया पर हाथों को देखकर फिर तरस आ गया। आखिर तो वह जैक की माँ ही थी। कहने लगी—"क्या तुम्हें इतना पता नहीं कि बिल्ली को इस तरह हाथों में पकड़कर नहीं लाना चाहिए। इसे तो गले में रस्सी बाँधकर लाना चाहिए था। तुम्हें कितनी बार समझाया पर तुम्हारी खोपड़ी में तो भूसा भरा हुआ है। कुछ समझते ही नहीं हो। अब आगे कभी ऐसी गलती न करना।"

अगले दिन जैक एक माँस बेचने वाले की दुकान पर काम करता रहा। उसने जैक को मजदूरी के बदले माँस का एक बड़ा-सा टुकड़ा दे दिया। जैक ने माँ की कल की सीख को याद किया और एक रस्सी का टुकड़ा लेकर माँस को उससे बांधकर रस्सी पकड़कर, घसीटता हुआ घर की ओर चल पड़ा। आज वह बहुत खुश था, क्योंकि आज वह खाली हाथ नहीं था।

पर माँ के गुस्से का फिर ठिकाना न रहा। घिसटते-घिसटते वह माँस किसी काम का न रह गया था। आज दोनों को भूखे-पेट रहना पड़ा। माँ उसे डांटने लगी—"मैंने तुम्हें बिल्ली को रस्सी से बांधकर लाने के लिए कहा था, मांस को नहीं, तुम एक बिल्ली और एक मांस के टुकड़े के बीच के फर्क को नहीं समझ सकते। मांस को तुम्हें कन्धे पर उठाकर लाना चाहिए था।"

जैक ने फिर वही रोज वाला जवाब दोहरा दिया कि "आगे कभी नहीं भूलूंगा।"

आखिरी बार वह एक गाय बकरियां पालने वाले के पास पहुँचा। उसने

उसे एक गधे का बच्चा दिया। जैक याद करने लगा कि उसकी माँ ने उसे क्या कहा था। उसने गधे को अपने कंधे पर रखा और घर की राह ली। गधे ने दुलत्तिां मार-मार कर जैक का बुरा हाल कर डाला। जैक बड़ी मुसीबत में पड़ा कि अब क्या किया जाए। इसे घर तक कैसे पहुँचाएँ? रास्ते चलते लोग गधे को कन्धे पर उठाया देखकर उस पर हँसते। पर जैक फिर भी नहीं समझ पाया कि लोग उसकी मूर्खता पर हँस रहे हैं।

जैक के रास्ते में एक अमीर की कोठी पड़ती थी। उस अमीर की एक ही लड़की थी। वह पिछले कई महीने बीमार रहने के कारण बहरी और गूँगी हो गई थी। वह सदा उदास रहती थी। कभी हँसती नहीं। बड़े-बड़े डाक्टर आए उसको ठीक न कर सके। आखिर एक डाक्टर ने कहा—"अगर कोई इसे जोर से हँसा देगा तो इसे सुनाई भी देने लगेगा और इसका गूँगापन भी दूर हो जाएगा। फिर क्या था। एक के बाद एक कई मसखरे आए। पर वह न हँसी। आखिर उसका पिता निराश होकर बैठ गया।

जिस समय जैक उस कोठी के आगे से निकल रहा था, वह लड़की खिड़की में खड़ी थी। उसने देखा कि जैक कंधे पर गधा उठाए जा रहा है। उसे हँसी आ गई। वह इतने जोर से खिलखिलाकर हँसने लगी कि घर भर के लोग सुन कर इकट्ठे हो गए कि आज कौनसी बात हो गई है, जिससे लड़की हँस पड़ी। जब उसका पिता उसके पास आया तो वह बताने लगी कि उसे किस बात पर हँसी आई। उसके पिता की खुशी का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि लड़की पहले ही की तरह बोलने और सुनने लगी है। वह दौड़ा-दौड़ा जैक के पास गया और कहने लगा—"मैं तुम्हारा बहुत एहसानमन्द हूँ। आखिर तुमने मेरी लड़की को हँसा ही दिया। इस हँसने से उसका गूँगापन और बहरापन ठीक हो गया है। मैं चाहता हूँ कि तुम उसके साथ शादी कर लो।"

जैक की शादी इस अमीर की लड़की से हो गई और दोनों मजे से रहने लगे। जैक की माँ के भी दुःख के दिन खत्म हुए। जैक और उसकी स्त्री उसकी खूब सेवा करते। अब सभी जैक की कदर करते। कोई उसे 'आलसी जैक' न कहता था।

सबको बुद्धू बनाया

बात बहुत पहले की है। डेन्मार्क में एक राजा राज करता था। इस राजा को बढ़िया-से-बढ़िया और नित नये कपड़े पहनने का शौक था। जब देखो नया सूट, नया डिजायन और नया फैशन। एक-से-एक बढ़िया उसके पास सैकड़ों सूट थे। फिर नित नया खरीदना। उसने कई दर्जी सूट सीने के लिए रख रखे थे, उसकी कपड़ों के शौक की यह बात दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

एक दिन दो ठग उसकी राजधानी में आए। उन्हें पता लगा कि राजा कपड़ों का बड़ा शौकीन है। उन्होंने राजा को ठगने की एक तरकीब सोच निकाली।

दूसरे दिन वे राजमहल में जा पहुँचे। कहने लगे कि "बढ़िया-से-बढ़िया कपड़ा बुनने वाले जुलाहे हैं। कहें तो एक-से-एक बढ़िया कपड़ा बुन कर दिखादें। नया डिजायन, नया रँग और मजबूत इतने कि टूटने का नाम न लें। राजा साहब! एक बार हमारे हाथ का बुना कपड़ा पहन लेंगे तो फिर किसी और का बुना उन्हें पसंद ही नहीं आएगा।" यह बात तो उन्होंने ऐसी कही कि राजा के मन में बैठ गई

कहने लगे—"महाराज ! हम राजा-महाराजाओं के लिए एक खास किस्म का कपड़ा भी बनाते हैं। बस, उसे आप जादू का ही कपड़ा समझिए। हर कोई तो उसे देख ही नहीं सकता। वह तो सिर्फ समझदार और अपने काम में होशियार आदमियों को ही दिखाई देता है। बेवकूफ और अपने ओहदे के नाकाबिल आदमियों को वह बिल्कुल दिखाई ही नहीं देगा।"

कपड़ों का शौकीन राजा उन जुलाहों की बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। सोचने लगा—'एक पन्थ दो काज।' एक तो बढ़िया कपड़े पहनने को मिलेंगे, फिर यह भी पता लग जायेगा कि कौन वजीर मूर्ख और वजीरी करने के नाकाबिल है। अफसरों की भी पहचान हो जाएगी।

उसने झट से जुलाहों को हुक्म दिया कि वे अपना जादू का कपड़ा बुनना शुरू करें। काम शुरू करने के लिए बहुत-से रुपये दे दिये। महल के भीतर ही खड्डी लगाने के लिए एक कमरा खाली करवा दिया और कह दिया कि अब देर नहीं होनी चाहिए। रुपयों की और जरूरत पड़े तो माँग लेना और कपड़ा बनाने में कोई कसर न रखना।

ठग मन-ही-मन खुश हो रहे थे। उन्होंने अपनी खड्डी लगाली और कपड़ा बुनने की तैयारी करने लगे। दूसरे ही दिन ठक-ठक खड्डी चलने लगी। उन्होंने शाम तक खूब डटकर काम किया और दिन डूबा तो उठकर शहर की सैर को निकले। राजा से रेशम खरीदने के लिए जितना रुपया मिला था खूब खाया-उड़ाया।

कुछ दिनों बाद राजा ने सोचा, देखूँ तो सही कपड़ा कितना और कैसा बुना गया ? लेकिन फिर ख्याल आया कि यह कोई ऐसा कपड़ा तो है नहीं। क्या मालूम मुझे दिखाई दे या नहीं ? अगर कहीं न दिखाई दिया तो मूर्ख और राजगद्दी के लिए नाकाबिल समझा जाऊँगा। यही सोचकर राजा अपने आप देखने जाने से घबराया। उसने अपने सारे वजीरों का ख्याल किया कि किसको पहले भेजूँ ? फिर एक पराने और समझदार वजीर को चुना कि वही सबसे

पहले कपड़ा देखे। राजा का विचार था कि यह बूढ़ा वजीर समझदार होने के साथ ही वजीरी करने के भी काबिल है। इसलिए उसे जरूर कपड़ा दिखाई देगा।

उसने वजीर को बुलाया और हुक्म दिया, "जाकर देखो कि कपड़ा कितना और कैसा बुन गया।"

बूढ़ा वजीर जुलाहों के कमरे में पहुँचा। खड्डी की ठक-ठक चल रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि काम बड़े जोर-शोर से हो रहा है। पर जब पास जा कर देखा तो उसकी हैरानी का ठिकाना न रहा। खड्डी पर सूत का नाम-निशान तक नहीं था। जुलाहे उसे खाली ही चलाए जा रहे थे। मूर्ख और नाकाबिल आदमियों को यह कपड़ा न दिखाई देने की बात उसे मालूम ही थी। सोचने लगा कि अगर मैं यह कहूँगा कि मुझे तो कपड़ा दिखाई ही नहीं दिया तो राजा मुझे मूर्ख और वजीर के काम के नाकाबिल समझेगा। खैर, वह खड्डी के बिलकुल पास जाकर देखने लगा। पर वहाँ तो कुछ भी नहीं था, जो दिखाई देता। जुलाहे इस समय भी खड्डी चलाए जा रहे थे। वजीर ने कहा कि सच-मुच कपड़ा बहुत बढ़िया है। रंग और डिजाइन की भी उसने खूब तारीफ की। और फिर ऐसा कपड़ा बुनने वाले जुलाहों की भी तो तारीफ करनी ही चाहिए थी। वजीर साहब ने वह भी कर दो।

वजीर जब वापस जाने लगा तो जुलाहों ने कहा कि वजीर साहब कपड़ा तो आप देख ही चले कि कितना बढ़िया है। अब राजा साहब से कहिए कि कुछ रुपये और भिजवा दें।

बूढ़ा वजीर राजा के पास गया और कहने लगा कि कपड़ा वाकई बढ़िया है। राजा ने जुलाहों को और बहुत-से रुपये भिजवा दिये।

दो-तीन दिन बाद राजा ने दूसरे वजीर को भेजा कि जाकर देख आए कि काम ठीक से हो रहा है या नहीं। दीखा तो उसे भी कुछ नहीं पर सच्ची बात कहकर मूर्ख कौन बनता? उसने भी आकर कह दिया कपड़ा बहुत ही अनोखा है।

राजा ने सोचा कि अगर दोनों वजीरों को कपड़ा दीख गया तो इसका मतलब है कि अपना काम करने के काबिल हैं। तो फिर कोई वजह नहीं कि मुझे वह कपड़ा दिखाई न दे। मैं भी तो अपने काम में खूब होशियार हूँ। यह सोचकर राजा भी कपड़ा बुनने की जगह पहुँचा। जुलाहे उसी तरह ठक-ठक खड्डी चला रहे थे।

पर वहाँ कुछ होता तो दिखाई भी देता। राजा ने सोचा—हो सकता है मैं ही मूर्ख होऊँ या अपने काम के नाकाबिल होऊँ। वह अभी सोच ही रहा था कि क्या कहे और क्या न कहे कि उनमें से एक जुलाहा पास आकर खड़ा हो गया और प्रणाम करके पूछने लगा कि "कहिए, महाराज! आपको कपड़ा पसन्द आया या नहीं? महाराज को इसका डिजाइन और बार्डर कैसे लगे?"

"हाँ, हाँ" राजा ने झट से जवाब दिया। उन जुलाहों ने मन-ही-मन सोचा कि राजा को कुछ दिखाई तो दिया नहीं है, वैसे ही कह रहे है। फिर पूछने लगे—"क्या आपने कभी इतना बारीक और इतने बढ़िया डिजाइन का कपड़ा आगे भी देखा है?"

"नहीं, मैंने आज तक इतना बढ़िया कपड़ा नहीं देखा था।" राजा ने उत्तर दिया।

कुछ ही दिनों बाद घोड़े पर राजा साहब की सवारी का जलूस निकाल कर उसे सारे शहर में घुमाना था। उन ठग जुलाहों को यह बात मालूम थी और उन्हें यह भी पता था कि राजा साहब हमेशा ही ऐसे मौके पर बढ़िया नए कपड़े पहनते हैं। उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि उस दिन तक यह नए कपड़े सिलकर तैयार हो जाएँगे। राजा यह सुनकर प्रसन्न हुआ।

अगले दिन उन ठगों ने अपने साथी तीसरे ठग को बुला लिया और कहने लगे कि यह बड़ा कारीगर दर्जी है यह इस सूट को सीएगा। इधर सूट सिलने की बात तय हो गई, तो राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो इस अनोखे कपड़े को देखना चाहे आकर देख ले। फिर क्या था, देखने वालों की भीड़ जमा हो

गई। पर उन में से किसी को भी कुछ दिखाई न दिया। इस पर भी किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि सीधी-सच्ची बात कह सके। सभी मूर्ख कहलाने के डर से सच्ची बात छिपा कर झूठ-मूठ तारीफ करने लगते।

दर्ज़ी रात भर कटाई-सिलाई के काम में लगा रहा। वह अपनी लम्बी और तेज कैंची से हवा में कपड़ा काटने जैसे हाथ चलाता। उसके बाद सुई हाथ में लेकर ऐसा करता जैसे धागा पिरो रहा हो। पर देखने वालों को तो न धागा दिखाई देता और न ही कपड़ा। फिर इस तरह हाथ चलता जैसे कुछ सी रहा हो। सारी रात यही कुछ होता रहा। सुबह होते ही उन्होंने राजा को कहला भेजा कि सूट सिल कर तैयार है। पहनकर देखलें, ताकि कोई नुक्स हो तो ठीक कर दिया जाए। राजा बड़ी उतावली से उसी समय सूट देखने आ पहुँचा। राजा के भीतर आते ही दर्जी ने कोट उठाने, बाजू फैलाकर पहनाने और बटन बन्द करके आगे-पीछे देखने का नाटक किया। फिर पूछने लगा कि "कहिए महाराज ! आपका यह सूट कैसा रहा है ?

यह बिल्कुल अनोखा है।" राजा ने जवाब दिया, "यह तो मकड़ी के जाले से भी हल्का है।" ऐसा लग रहा है कि कुछ पहन ही नहीं रखा है।"

सूट पहन कर राजा शीशे के सामने जा खड़ा हुआ और देखने लगा। आस-पास खड़े सब लोग सूट की तरफ देखने लगे। कुछ ने कहा—'बड़ा सज रहा है।' कुछ ने सिलाई की तारीफ की तो कुछ कपड़े की बारीकी और रंग की तारीफ करने लगे।

उधर सवारी निकलने का समय हो रहा था। राजा साहब सूट पहने घोड़े पर जा बैठे। सड़क के दोनों ओर जनता कतारें बनाकर खड़ी थी और एक टक राजा साहब को देख रही थी। सभी एक-दूसरे से कहते कि "इस नए सूट में राजा साहब बहुत अच्छे लग रहे हैं ! हमें तो इस बात की हैरानी है कि जुलाहों ने इतना बारीक कपड़ा कैसे बुना ? जरा रंग और डिजायन तो देखो कितने गजब का है ? हमने तो कभी ऐसा कपड़ा देखा भी नहीं था।"

सभी अपनी मूर्खता छिपाने के लिए तरह-तरह की बातें कर रहे थे। एक भी ऐसा साहसी न निकला, जो दिल की सच्ची बात कह सकता। राजा साहब केवल एक कच्छा पहने सारे शहर में घोड़े पर बैठे घूमते रहे।

आखिर छोटा लड़का दौड़ता हुआ आया और अपने पिता से चिल्लाकर कहने लगा—'देखो पिताजी' आज हमारे राजा साहब बिना कोट-पैंट पहने ही क्यों घोड़े पर बैठे घूम रहे हैं। रोज तो वे बहुत बढ़िया-बढ़िया कोट पहना करते हैं। फिर आज क्या बात है जो केवल एक कच्छा मात्र पहन रखा है।

बस, फिर क्या था ? सारे बच्चे ताली पीट-पीट कर हँसने लगे और चिल्लाने लगे कि राजा साहब बिना सूट के बैठे हैं। बच्चों की बात सुन कर बड़ों में भी काना-फूसी होनी शुरू हो गई। थोड़ी देर पहले जो लोग सूट की तारीफ कर रहे थे, वे ही अब कहने लगे कि राजा ने केवल एक कच्छा ही पहन रखा है।

पहुँचते-पहुँचते आखिर बात राजा तक पहुँची। राजा ने सोचा—बात तो उन्हीं की सच्ची है। उसे ख्याल आया कि उन झूठे ठग जुलाहों ने मुझ से एक चाल चली है। मेरे कपड़ों के शौकीन होने का मजाक उड़ाया है। वह मन ही मन बहुत लज्जित हुआ, पर अब क्या हो सकता था ? उसने सोचा कि अगर आधे रास्ते से ही जलूस वापिस हो जाएगा तो वे ठग अपनी पोल खुलने का पता लगने पर भाग निकलेंगे। इसलिए जलूस सारे शहर में घूमता रहा। राजा ने सोचा कि वापिस जाकर उन ठगों को ऐसी सजा दूँगा कि याद करेंगे।

जब राजा की सवारी महलों में वापस पहुँची तो राजा ने जुलाहों को बुला भेजा पर तब तक वे भाग चुके थे।

बङ्गाल का जादू

सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में बंगाल का एक बाजीगर आ पहुँचा। कहने लगा—"महाराज, मैं सीधा बंगाल से आ रहा हूँ। और आपके दिल बहलावे के लिए कुछ जादूगरी के करतब दिखाना चाहता हूँ। महाराज ! मैं कोई ऐसा-वैसा जादूगर नहीं हूँ जो सड़क के किनारे लोगों को घिसे-पिटे दो-चार खेल दिखाकर पैसा माँगते फिरते हैं। मैं तो बड़े-बड़े धनी-मानी लोगों के पास ही जाता हूं, जो काम की कदर करना जानते हैं। कहें तो बीसियों चिट्ठियाँ निकाल कर दिखा दूं यह चिट्ठियाँ लोगों ने मेरे जादू के कमाल देखकर लिख दी हैं। और फिर महाराज ! मेरा तो यह खानदानी पेशा है। मेरे पिता, दादा, परदादा भी यही काम करते थे। बंगाल का तो बच्चा-बच्चा हमारे खानदान को जानता है। हुक्म दें तो शुरू करूँ।" और हुक्म के लिए महाराज के मुंह की ओर देखने लगा।

इधर दरबारियों का हाल देखिए। उसकी बातें सुनकर सब उतावले हो रहे थे कि कब महाराज हुक्म दें और कब यह जादूगर अपने करतब दिखाना शुरू करे।

महाराज क्षण भर तो चुप रहे। फिर कुछ सोचकर कहने लगे—"अभी नहीं, इस वक्त हम कुछ जरूरी काम कर रहे हैं। परन्तु हम तुम्हें निराश नहीं

करेंगे। तुम्हें अपने कमाल दिखाने का मौका दिया जाएगा और अगर दरअसल तुमने कोई कमाल दिखाया तो हम तुम्हें खुश करेंगे। खूब इनाम देंगे। अब तुम जाओ और कल ठीक इसी वक्त आ जाना। वक्त का ख्याल रखना, देखना कहीं देर करके मत आना, नहीं तो निराश लौटना पड़ेगा।"

बंगाली जादूगर ने सिर झुकाकर नमस्कार किया और यह कहता हुआ कि "महाराज कल ठीक इसी समय सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।" चल दिया।

दूसरे दिन ठीक उसी समय, जिस समय जादूगर को आना चाहिए था। डयोढ़ी पर हथियारों से लैस एक नौजवान आ पहुँचा। उसके साथ एक अत्यन्त रूपवती स्त्री भी थी। उसने दरबार से कहा—"मैं महाराज के पास जाना चाहता हूँ।

दरबान ने भीतर जाकर सम्राट से पूछा कि महाराज, बाहर हथियारों से लैस एक नौजवान और उसकी स्त्री खड़े हैं, और आपसे मिलना चाहते हैं। हुक्म हो तो लाकर हाजिर करूँ।

महाराज सोचने लगे कि यह समय तो मैंने उस बंगाली जादूगर को दे रखा है। पर खैर अभी तक नहीं आया तो न सही।

अब जरा दरबारियों का हाल सुनिए। सबकी नजरें डयोढ़ी की तरफ़ लगी हुई थीं कि कब जादूगर आए और तमाशा शुरू करे। बीच में इस हथियार बन्द नौजवान के आने की बात से सब मन ही मन नाराज थे, कि यह कौन बे-वक्त आ टपका। उधर रनिवास में भी पता लग चुका था कि कोई जादूगर आज अपना तमाशा दिखाएगा। इसलिए सारी रानियाँ और दासियाँ भी तमाशा देखने खिड़कियों में आ बैठी थीं।

खैर महाराज ने दरबान को कहा—"तुम जल्दी ही उस नौजवान को और उसकी स्त्री को लाकर हाजिर करो।"

दरबान डयोढ़ी पर से उन दोनों को महाराज के पास छोड़कर वापस लौट आया।

महाराज ने उस नौजवान से पूछा—"कहो नौजवान ! तुम क्या कहना चाहते हो ?"

नौजवान ने कहा—"महाराज मुझे देवलोक में देवराज इन्द्र ने बुलाया है। इधर फिर से देवताओं व राक्षसों में लड़ाई छिड़ गई है। उन्होंने इस लड़ाई में मुझसे सहायता माँगी है मैं वहीं जाने की तैयारी में हूं। पर मेरी एक कठिनाई है, महाराज ! मैं इस स्त्री को कहाँ छोड़ जाऊँ। पता नहीं वहाँ कितने दिन लगें। हो सकता है महीनों लग जाएँ। तब तक इसकी रक्षा कौन करेगा ? आखिर सोच-सोच कर मेरी समझ में तो आप ही एक ऐसे व्यक्ति दिखाई दिए जिन पर पूरा विश्वास किया जा सकता है। बस, यही प्रार्थना है। इसे तब तक के लिए अपने यहाँ रखिए। उधर से लौटते ही मैं इसे वापिस ले जाऊँगा।"

"चिन्ता मत करो वीर ! तुम्हारी स्त्री की हम पूरी रक्षा और पालना करेंगे। बस जब वापस आओ तो इसे ले जाना। पर एक बात बताओ। तुम देवलोक में, देवराज इन्द्र के पास जाओगे कैसे ?"

"महाराज, यह मेरे लिए कुछ भी कठिन नहीं है। हाथ कंगन को आरसी क्या। बस एक उड़ान, केवल एक उड़ान में, मैं देवलोक में जा पहुँचूंगा। पर महाराज मेरी स्त्री की पूर्ण रक्षा और पालन करना। उसे अपनी पुत्री की भाँति समझिए। महाराज, वैसे तो आप पर मुझे विश्वास है पर कामिनी और काँचन पर बड़ों-बड़ों की नियत खराब हो जाती है। इसलिए बार-बार कह रहा हूं।"

"कैसी बातें करते हो वीर, क्या तुम विक्रम के धर्माचरण को नहीं जानते !" तुम निश्चित होकर देवराज के शत्रुओं को हराओं। युद्ध में अपने जौहर दिखाओ।" महाराज कहने लगे।

बहुत अच्छा ! महाराज मैं जाता हूँ।" उसने एक बार उस स्त्री की ओर देखा और उससे तथा महाराज से विदा लेकर वह यों उड़ चला जैसे कोई पक्षी हो। स्वयं महाराज और सारे दरबारी उसे उड़ते देखकर दंग रह गए। वह काफी दूर तक उन्हें दिखाई देता रहा। फिर ओझल हो गया।

महाराज ने उस स्त्री को एक दासी के साथ अपने रनिवास में भिजवा दिया और दासी को कह दिया इसे किसी प्रकार का कष्ट न हो।

बंगाली जादूगर नहीं आया। अब उसके आने की बात पर किसी का ध्यान भी नहीं गया। यही क्या कम तमाशा था कि आदमी आसमान में उड़ गया।

अब दूसरे दिन की बात सुनिए। आसमान में बिना बादलों के ही बड़े ही जोरशोर के धमाके होने लगे। महाराज विक्रम का दरबार तो लगा हुआ ही था। सब दरबारी और स्वयं महाराज भी आकाश की ओर देखने लगे कि बिन बादलों के यह गड़गड़ाहट कैसी ? तभी महाराज कहने लगे—"शायद देवताओं और राक्षसों में लड़ाई होने लगी है। कल जो वह नौजवान कह रहा था, वह बात सच ही निकली।"

यह तोपें चलने और गोले फटने जैसे धमाके लगातार होते रहे। थोड़ी देर बाद एक कटा हुआ बाज़ू पास ही आ गिरा। कुछ देर बाद टाँगें और फिर सिर और धड़। जब सिर को देखा—तो सब एक ही साथ कह उठे कि "यह तो उसी आदमी का सिर है जो कल अपनी स्त्री को यहाँ छोड़ गया था। बेचारा मारा गया।"

महाराज ने दासी के साथ उसकी स्त्री को कहला भेजा कि तेरा पति उस लड़ाई में मारा गया। उसका सिर, धड़ और दूसरे अंग अभी-अभी यहाँ गिरे हैं। तुम आकर पहचान लो कि उसी के हैं या उससे मिलती-जुलती शक्ल वाले किसी दूसरे के तो नहीं।

स्त्री भीतर ले आई। उसने कटे सिर को देखा तो जोर-जोर से रोने लगी। यह उसी के पति का सिर था। फिर उसने महाराज से कहा कि वह सती हो जाएगी। अब महाराज उसे कैसे रोकते। उन दिनों पति के मरने पर सभी स्त्रियाँ सती हो जाती थीं। यह बड़ा पवित्र काम समझा जाता था। आखिर चिता बनाई गई और वह स्त्री अपने पति के सिर और दूसरे अंगों के साथ चिता पर बैठकर सती हो गई।

अब तीसरे दिन की बात सुनिए। सम्राट् का दरबार रोज ही की तरह

लगा हुआ था। देखते क्या हैं कि आसमान से कोई आदमी उड़ता हुआ नीचे की तरफ आ रहा है। आते-आते वह राज दरबार में उतर पड़ा। उतरते ही उसने राजा को नमस्कार किया।

सब हैरान-परेशान थे। अरे यह तो वही आदमी है जिसे हमने मरा समझ लिया था। और हमारी ही क्या बात ! उसकी स्त्री ने भी तो पहचान कर उसे अपना पति ही बताया था। और वह बेचारी सती भी हो गई।

नमस्कार करने के बाद उसने कहना शुरू किया, "महाराज, आपको यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि देवराज इन्द्र की जीत हुई और राक्षस हार गए। लड़ाई समाप्त हो गई और मैं अभी-अभी वहीं से आ रहा हूँ। आपने मेरी स्त्री को अपने यहाँ जो रहने दिया, उस कृपा के लिए मैं आपका आभारी हूँ। अब आप कृपा कर उसे भीतर से बुलवा दीजिए।"

अब तो महाराज विक्रमादित्य बहुत सकपकाए। उनसे कुछ कहते ही नहीं बनता था। कहते भी क्या ? बात ही बड़ी अजीब थी। फिर भी जो बात हुई थी, वह तो कहनी ही थी।

महाराज बोले—"नौजवान, हमें तुम्हें देख कर बहुत हैरानी हो रही है। हमने तो तुम्हें युद्ध में खेत हुआ समझ लिया था। दर-असल बात यह हुई कि कल आसमान में बिना बादलों के ही बहुत धमाके होने लगे। हमने समझा कि देवों और दानवों में लड़ाई शुरू हो गई।"

"आपने ठीक ही समझा महाराज, कल सुबह ही लड़ाई शुरू हो गई थी।" नौजवान बीच ही में बोल पड़ा।

"थोड़ी देर बाद ऊपर से एक योद्धा के बाजू, टाँगें, धड़ और सिर गिरा। हम सबने देखा तो ऐसा लगा कि वह सिर और बाकी अंग तुम्हारे ही थे। आखिर तुम्हारी स्त्री को बुलाया कि वह पहचाने। उसने भी उस सिर को तुम्हारा ही बताया और कहने लगी मैं सती होऊँगी। हमने उसके इस पवित्र विचार में कोई बाधा न पहुँचाई। और वह कल ही सती हो गई।"

"महाराज यह कैसे हो सकता है कि एक स्त्री अपने पति को न पहचान सके। मैं तो प्रत्यक्ष आपके सामने खड़ा ही हूँ। मुझे तो आपकी सारी कहानी मन-गढ़ंत लग रही है। मैं पहले ही न कहता था कि कामिनी और काँचन बड़ों-बड़ों की नियत को खराब कर देते हैं। पर मुझे सम्राट विक्रमादित्य से ऐसी आशा बिल्कुल न थी। आप उसके रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हो गए हैं और उसे अपनी रानी बनाना चाहते हैं। मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि आप की यह बुरी कामना जीते-जी नहीं पूरी होने दूँगा। मेरी जो तलवार अभी राक्षसों पर विजय पाकर आई है; वह पापी विक्रम पर भी दया न करेगी। महाराज, भला इसी में है कि आप मेरी स्त्री को लौटा दें और अपने माथे पर कलंक का टीका न लगवाएँ।"

यह जली-कटी बातें सुनकर विक्रम की भौंहें तन गईं। हाथ तलवार की मूँठ पर जा पहुँचा। भरे दरबार में सम्राट इस तरह अपमानित किया गया था। वह क्रोध भरी आवाज में कहने लगा—वीर! जो कुछ कह रहा हूँ वह बिल्कुल सच है। सारे दरबारी उसके गवाह हैं। और अगर तुम्हें अपनी तलवार पर अभिमान हो तो विक्रम उसके लिए भी तैयार है।"

"मैं कहता हूँ कि आपके यह कहने की, कि मैं सच कह रहा हूँ, कौड़ी भर भी कीमत नहीं है। मेरी स्त्री को आपने अवश्य अपने महलों में कहीं छिपा रखा है। अगर मुझे अभी जाने दें तो अभी आपके सच की पोल खोल दूँ।"

"तुमको भीतर जाने से रोकता कौन है। जहाँ जी में आए ढूंढ लो।" महाराज ने उत्तर दिया।

वह वीर भीतर रनिवास में चला गया और इधर-उधर अपनी स्त्री का नाम पुकार-पुकार कर आवाज देने लगा। और थोड़ी ही देर बाद स्त्री को लेकर महाराज के पास आ गया।

वीर कहने लगा—यह रही मेरी स्त्री! मैं आगे ही न कहता था कि बस बेचारी को आपने कहीं छिपा रखा है। अब बताइये. आपका सच कहाँ गया?

सम्राट विक्रमादित्य और सारे दरबारी आँखें फाड़-फाड़ कर उस की ओर देख रहे थे। उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वे सोच रहे थे कि कल जो कुछ हुआ था, वह सच था कि अभी जो कुछ आँखों के सामने देख रहे हैं, वह सच है ? सब के सब सन्न रह गए।

उस नौजवान ने महाराज के आगे सिर झुका कर कहा—"महाराज मैं वही बंगाली जादूगर हूँ। कहिए तमाशा कैसा रहा आपको पसन्द आया न ?"

महाराज आश्चर्य और खुशी से गद्गद् हो उठे। सारे दरबारी भी वाह-वाह कर उठे।

महाराज उस जादूगर के इस कौतिक से बहुत प्रसन्न हुए। इनाम में उन्होंने अपने गले का हार उतार कर उसे दे दिया।

युक्ति से मुक्ति

एक दिन एक किसान फावड़े से कुछ खोद रहा था। कि उसे सोने की मुहरों से भरा हुआ सन्दूक मिला।

उसने सोचा, यदि इसे अभी ले जाऊँगा तो सब लोग जान जायेंगे। बड़ा हो-हल्ला मचेगा। और यदि सरकार को पता लग गया तब तो इसमें से मुझे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी। वह सन्दूक को वहीं छिपा कर रख गया और सारी बात अपनी घरवाली से कह सुनाई।

उसकी स्त्री बड़ी बातून थी। झूठी-सच्ची कहने में उसे बड़ा मजा आता था। इसकी उससे और उसकी इससे कहते फिरना उसका काम था। इस काम के लिए वह गाँव भर में बदनाम भी थी।

वह कोई बात छिपा नहीं सकती थी, चाहे घर की हो या बाहर की। फिर इस बात को ही कैसे छिपाती। उसने अपनी पड़ोसिन से कहा, पड़ोसिन ने दूसरे से और दूसरी ने तीसरी से। बस फिर क्या था। बात की बात में यह बात सारे

गाँव में फैल गई। किसान को पता लगा कि गाँव के बच्चे-बच्चे को मुहरों का सन्दुक मिलने का पता चल गया है तो वह बहुत घबराया। पर अब क्या हो सकता था। उसे अपने पर ही क्रोध आने लगा कि उसने मूर्ख स्त्री को यह बात क्यों बताई जबकि यह जानता था कि वह सबसे कहती फिरेगी।

आखिर उसने एक उपाय सोच निकाला। दूसरे दिन वह सुबह ही उठा। और बाजार चल दिया। वहाँ उसने कुछ मछलियाँ, एक खरगोश और कुछ केक खरीदे। उन सबको लेकर वह सीधा वहीं पहुँचा, जहाँ उसे मुहरों से भरा संदूक मिला था।

उसने मछलियों को वृक्षों की टहनियों से लटका दिया। वह अपने साथ एक मछलियाँ पकड़ने वाला जाल भी लेता गया था। जाल को उसने पास ही बहती हुई नदी में फैला दिया और खरगोश को उसमें फँसा दिया। इसके बाद केकों की बारी थी। उन्हें भी उसने छोटे-छोटे पौधों पर अटका दिया। इतना कुछ कर चुकने के बाद वह लौट आया।

घर पहुँचते ही उसने अपनी घरवाली से कहा—"चलो जंगल में मछलियाँ ले आएँ। मैं अभी-अभी देख कर आ रहा हूँ कि वृक्षों की टहनियों में मछलियाँ लटकी हुई हैं।"

"जंगल में मछलियाँ ?"

उसकी स्त्री ने बड़े आश्चर्य से बात को दुहराते हुए पूछा, "तुम कह क्या रहे हो ? कहीं तुम्हारा दिमाग़ तो खराब नहीं हो गया है।"

"मेरे साथ चलो और देख लो।" किसान ने उत्तर दिया।

और वह दोनों जंगल की ओर चल दिए।

वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि किसान की स्त्री को वृक्षों की टहनियों से लटकती हुई मछलियाँ दिखाई दीं।

"जरा इस ओर तो देखो !" उसने अपने पति से कहा। उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

"आखिर मेरी बात ठीक निकली न। तुम तो मेरी बात पर विश्वास ही नहीं करती थीं। अब बताओ ?" किसान बोला।

उन दोनों ने मछलियाँ को टहनियों पर से उतारा और टोकरी में रख लिया इसके बाद वे कुछ और आगे बढ़े।

कुछ कदम आगे चलने पर किसान की स्त्री ने देखा कि पौधों के साथ केक लटक रहे हैं। वह फिर आश्चर्य से एकटक इन केकों की ओर देखने लगी।

उसने कहा—"आज एक-से-एक बढ़कर अनोखी चीजें दिखाई दे रही हैं। जरा इस तरफ तो देखो।" उसने किसान को पास खींचते हुए कहा—"कितने बढ़िया-बढ़िया केक इन पौधों से लटक रहे हैं ?"

किसान ने उत्तर दिया—क्या तुम नहीं जानती हो कि रात को केकों की वर्षा हुई है।"

उसकी स्त्री ने उन पौधों पर से जी-भर केक उठाकर अपनी टोकरी में डाल लिए वे दोनों फिर आगे को बढ़े।

कुछ दूर चलने पर वे नदी के किनारे पहुँच गए। किसान ने कहा "मुझे प्यास लग रही है। थोड़ा पानी पी लूँ।"

वह अपनी स्त्री को उस स्थान पर खड़ा कर गया, जहाँ उसने जाल फैला-कर खरगोश को उसमें फँसा रखा था और स्वयं उस स्थान से जरा एक ओर को पानी पीने लगा।

उस स्त्री की नजर उस जाल पर पड़ी। ध्यान से देखने पर उसमें कोई चीज फँसी हुई दिखाई दी। वह जोर से चिल्लाई—"देखो, इधर आओ। वहाँ जाल में फँसी हुई कोई चीज दिखाई दे रही है। परन्तु वह मछली नहीं, कुछ और ही है।

किसान भीतर से तो सब कुछ जानता ही था कि आज सुबह वह यह सब करके गया है किन्तु इस समय वह इस ढंग से सब कुछ कर रहा था, जैसे यह बात उसके लिए भी उतनी ही नई है, जितनी उसकी स्त्री के लिये।

किसान ने झट-पट आकर उस जाल को बाहर निकाला। देखा तो उसमें एक मोटा-ताजा खरगोश फँसा हुआ था। दोनों की खुशी का ठिकाना न रहा।

उसकी स्त्री को अपनी आँखों पर विश्वास न हो रहा था। पानी में खरगोश कैसे फँसा था ? किन्तु आज तो इससे पहले भी वह ऐसी ही दो और बातें अपनी आँखों से देख चुकी थी।

आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ उसने खरगोश को भी टोकरे में रख लिया। वह सोचने लगी—देखें अभी कौन-सी अनोखी घटना घटती है।

अब किसान उसे लेकर वहाँ पहुँचा जहाँ सोने की मुहरों से भरा सन्दूक छिपा रखा था। वह एक वृक्ष के पास जाकर उसके कोटर में घुसा और जमीन की तरफ उतरने लगा। वह नीचे से उस सन्दूक को उठा लाया और अपनी स्त्री को दिखाने लगा। इसके बाद उसने मुहरें निकाल कर दूसरी जगह 'गाड़ दीं' और दोनों वापिस घर आये।

जब वह अपने घर पहुँचे तो देखते क्या हैं कि थानेदार दरवाजे पर बैठा इन्तजार कर रहा है। जो कुछ किसान ने सोचा था वही हुआ।

उसकी स्त्री आज सुबह पनघट से पानी लाने गई थी तो सबसे कह आई थी कि मेरे पति को सोने की मोहरों से भरा एक सन्दूक मिला है। इस बात का पता गाँव के बच्चे-बच्चे को लग गया और बात पहुँचते-पहुँचते थानेदार के कान में पड़ी। वह इसकी जाँच-पड़ताल करने आया था कि वास्तव में बात क्या है ?

उसने किसान से कहा कि वह इन मुहरों को सरकारी खजाने में जमा करा दे क्योंकि इस प्रकार के धन पर सरकार का ही अधिकार होता है।

किसान ने थानेदार को कहा—"मुझे तो मुहरें-वुहरें कुछ मिली नहीं। आपसे किसने कहा।

थानेदार ने उत्तर दिया—"तुम्हारी घर वाली ने गाँव के लोगों से कहा, उनसे मैंने सुना।"

"अच्छा तो यह बात है !" किसान ने कहा—"वह जो कुछ भी कहे, उसकी

किसी बात पर विश्वास मत कीजिए। वह तो पागल है पागल। कभी-कभी वह बड़ी विचित्र बातें किया करती है। देखना चाहो तो उससे कुछ पूछकर देखलो।"

थानेदार ने किसान की स्त्री को बुलाया और पूछने लगा—"क्या, तुम्हारे पति को मुहरें मिली हैं ?"

"हाँ, हाँ, मिली हैं।" किसान की स्त्री ने जवाब दिया।

"ये मोहरें उसे मिलीं किस जगह ?" थानेदार ने दूसरा सवाल पूछा। और इस बारे में तुम्हें जो कुछ भी मालूम है बताओ।"

फिर क्या था उसने सारी कहानी सुनानी आरम्भ कर दी।

"पिछले दिन मेरे पति जब शाम को घर लौटे तो कहने लगे कि मुझे जंगल में सोने की मोहरों से भरा हुआ एक सन्दूक मिला है। आज सुबह ही हम दोनों जंगल में गए और मछलियाँ पकड़ लाये।"

"जंगल में मछलियाँ ?" थानेदार ने बड़े आश्चर्य से पूछा। "कैसी पागल-पन की बातें कर रही हो ! अच्छा खैर आगे बताओ ?"

किसान की स्त्री ने फिर कहना प्रारम्भ किया—"नहीं, यह बिल्कुल सच है, हमें एक वृक्ष पर कुछ मछलियाँ मिलीं। और थोड़ी दूर आगे चलने पर पौधों से लटके हुए केक मिले। यह केक पिछली रात बरसे थे और वहाँ पड़े हुए थे। फिर हम थोड़ी दूर आगे बढ़े तो नदी आ गई। नदी में जाल में फँसा हुआ एक खरगोश मिला। इसके बाद एक वृक्ष की जड़ों में बने गढ़े में से हमें वे मोहरें मिलीं।

किसान जोर का ठहाका मारकर कहने लगा—"सुन लिया आपने ? मैंने पहले ही कहा था न कि वह पागल है। क्या आप इन बातों पर विश्वास कर सकते हैं ? क्या कभी आपने वृक्षों पर मछलियाँ, पौधों पर बरसे हुए केक और नदी में जाल में फँसा हुआ खरगोश देखा है ?"

थानेदार ने स्वीकार किया कि यह सब बातें निरी बकवास हैं और स्त्री सचमुच पागल है। और वह वापिस चला गया। बाद में किसान उन मोहरों को घर उठा लाया।

राजा का चेहरा

एक किसान अपने खेत में काम कर रहा था। उसी समय उस देश का राजा वहाँ आ निकला। राजा खड़ा हो गया और किसान से पूछने लगा—"क्यों जी, तुम दिन भर कितना कमा लेते हो ?"

किसान ने उत्तर दिया—"चार आने।"

राजा ने पूछा—"उन को कैसे खर्च करते हो ?"

किसान ने उत्तर दिया—"पहले आने को मैं खाने-पीने में खर्च करता हूँ। दूसरे को मैं ब्याज पर देता हूँ। तीसरे से पिछला कर्ज चुकाता हूँ और चौथे को फिजूल गंवाता हूँ।

यह पहेली राजा की समझ में जरा भी नहीं आई। इसलिए उसने फिर पूछा—"तुम्हारे यह कहने का वास्तव में अभिप्राय क्या है ?"

तब उस किसान ने राजा को समझाते हुए कहा—"पहले आने से मैं

अपने खाने-पीने की चीजें खरीदता हूँ। दूसरे आने से मैं अपने बच्चों के खाने-पीने की चीज़ों का इन्तजाम करता हूँ। इस समय बच्चों को जो कुछ खिला-पिला रहा हूँ, वह मुझे ब्याज समेत वापस मिल जाएगा। सुनो, कैसे ? जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा और कुछ कमा न सकूँगा तब ये बच्चे ही मुझे खिलाएँ-पिलाएँगे। तीसरे आने से मैं अपने पिता के खाने-पीने का प्रबन्ध करता हूँ। इस प्रकार मैं अपना पिछला कर्ज चुका रहा हूँ। क्योंकि जब तक मैं बच्चा था और कुछ कमा नहीं सकता था, तब तक वे ही मुझे पालते-पोसते रहे हैं। अब चौथे आने की बात सुनो। उससे अपनी स्त्री के खाने-कपड़े का प्रबन्ध करता हूँ। उससे मुझे न बचपन में कुछ लाभ हुआ और न बुढ़ापे में ही होने वाला है। इसलिए उसे बेकार ही समझो।"

जब किसान अपनी बात कह चुका तो राजा ने उससे कहा—"तुम मुझसे वायदा करो कि जब तक तुम सौ बार मेरा चेहरा न देख लोगे तब तक इन बातों के ये जवाब जो तुमने मुझे बताए और किसी को न बताओगे।

किसान ने वायदा किया कि वह किसी को नहीं बताएगा और वह अपना काम समाप्त करके घर चला गया। राजा ने भी अपना रास्ता लिया।

राजा ने अपने महलों में जाकर अपने मंत्रियों से कहा—"सुनो, मैं तुमसे एक पहेली पूछता हूँ। इसका ठीक-ठीक उत्तर दो। मेरे राज्य में एक किसान है। वह चार आने रोज कमाता है। पहले आने को वह खाता है। दूसरे को ब्याज पर देता है, तीसरे से पिछला कर्ज चुकाता है और चौथे को व्यर्थ गँवाता है। इसका अभिप्राय क्या है ?"

मंत्री कई दिनों तक सोचते रहे किन्तु किसी की समझ में कुछ नहीं आया। तब एक मंत्री ने किसी से सुना कि कुछ दिन पहले राजा की एक किसान से बात-चीत हुई थी और पहेली का उत्तर उसे मालूम है। उसने निश्चय किया कि वह उस किसान को खोजेगा और उससे इन सवालों का जवाब पूछकर राजा को बता देगा। आखिर उस मंत्री ने उस किसान को ठीक उसी जगह जहाँ पहले राजा से उसकी बात-चीत हुई, खेत में काम करते खोज लिया।

मंत्री ने वह पहेली उसे बताई, जो राजा ने मंत्रियों से पूछी थी और उसका उत्तर पूछा। पर किसान तो राजा से वायदा कर चुका था। वह कैसे बताता। उसने अपनी मजबूरी बताते हुए कहा—"मैं तो राजा से वायदा कर चुका हूँ कि जब तक सौ बार राजा का चेहरा न देख लूँगा, इसका जवाब किसी को नहीं बताऊँगा।"

"बस इतनी सी बात!" मंत्री ने कहा। "यह तो बहुत आसान काम है।" उसने थैली से गिन कर सौ सोने की चेहरेदार शाही मोहरें निकालीं और एक-एक करके किसान को दिखाने लगा। पूरी सौ मोहरें देख लेने के बाद किसान ने पहेली का उत्तर मंत्री को बता दिया।

अब तो मंत्री की खुशी का ठिकाना न रहा। वह वापिस राजा के पास आया और कहने लगा कि वह उस पहेली का सही-सही उत्तर बता सकता है।"

राजा ने पूछा तो उसने जैसा किसान से सुना था, बता दिया।

राजा ने कहा—"अवश्य ही यह जवाब तुम्हें उस किसान ने ही बताया होगा। परन्तु उसने मेरे साथ वायदा किया था कि जब तक वह एक सौ बार मेरा चेहरा न देख लेगा किसी को भी इसका जवाब नहीं बताएगा।"

राजा ने उस किसान को बुला भेजा। और आने पर वायदा पूरा न करने के अपराध में सजा भुगतने को कहा।

किसान ने अपनी सफाई देते हुए कहा कि "उसने सौ बार राजा के चेहरे को देख लिया था। और यही कारण था कि उसने मंत्री को उसका जवाब बता दिया। साथ ही उसने सौ चेहरे शाही मोहरों की थैली राजा को दिखाई कि यह रहा आपका चेहरा।"

राजा उसकी चतुराई से बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे सौ सोने, की मोहरें और इनाम में दीं।

यह भी खूब रही !

उत्तरी कोरिया के एक छोटे-से गाँव में किम और उसकी स्त्री बड़े मजे में रहते थे। किम ने पानी से चलने वाली आटा पीसने की चक्की लगा रखी थी। वह इस काम में बहुत होशियार था। कुछ सालों बाद वह अच्छा-खासा अमीर बन गया।

उत्तरी कोरिया की राजधानी सियोल देखने की उसकी बहुत इच्छा थी, पर अब तक वह दबाए बैठा था। अब उसे रुपये-पैसे की कमी तो थी नहीं इसलिए सोचा कि अब तो राजधानी देखने ज़रूर जाऊँगा। जब वह तैयार होकर चलने लगा तो उसकी स्त्री कहने लगी कि मेरे लिए वहाँ से कोई बढ़िया-सी चीज लेते आना।

गाँव में तो किम खूब होशियार समझा जाता था, मोल-भाव करने में भी वह एक ही था। लोग उसकी समझ की कदर करते थे। पर सियोल पहुँचते ही बड़े शहर को देखकर वह चकाचौंध हो गया। यहाँ उसने ऐसी-ऐसी चीजें

देखीं जिनका उसने कभी नाम तक न सुना था। चुस्त-चालाक शहरी लोगों में वह बुद्धू जैसा लगता था। उसके देहाती ढंग के कपड़े देखकर लोग हँसते थे।

जब उसने यहाँ के बड़े बाजार को देखा तो हैरानी से मुँह बिचका कर और आँखें फाड़ कर देखने लगा।

उसे इस हालत में खड़े देखकर शहरी लोग उससे मजाक करने लगे। एक ने कहा— 'क्यों भुक्खड़ जी, क्या आप चाँद का स्वाद लेने के लिए मुँह खोले खड़े हैं ?''

थोड़ी देर में वहाँ से कुछ लड़के गुजरे। कहने लगे—"ऐ पिंजरा महाराज, जरा इस तरफ आइए। देखिए न यह चिड़िया भीतर घुसने के लिए इंतजार कर रही है।'' उसका मुँह अब भी खुले का खुला ही था।

किम का आज तक ऐसा तीखा मजाक किसी ने नहीं उड़ाया था। खैर धीरे-धीरे वह शहरियों के रहन-सहन और रीति-रिवाज सीख गया। अब वह अपने घर लौट आना चाहता था। घर ले जाने के लिए उसने कई बढ़िया चीजें खरीदीं।

एक दिन वह ढोलक खरीद रहा था, दुकानदार ने पहचान लिया कि यह कोई देहाती है। पहले तो उसने कीमत बढ़ाकर बताई और फिर उसने किम का मजाक उड़ाने की सोची। कहने लगा—"देहाती भाई, देखो उस गली के मोड़ पर एक अनोखी दुकान है। वहाँ तुम्हें ऐसी-ऐसी चीजें देखने को मिलेंगी जो तुमने आज तक न देखी होंगी।

किम बताये हुए रास्ते से उस दुकान पर पहुँचा। भीतर घुसते ही उसकी नजर चाँद की तरह गोल, एक चीज पर पड़ी। जब उसने उसके पास जाकर उसे देखा तो उसमें एक आदमी का चेहरा दिखाई दिया। यह चेहरा उसके पिता से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। किम ने सोचा—पिता जी तो अब रहे नहीं, उनकी यादगार के लिए उनका चेहरा बड़ीं अच्छी चीज होगी। उसने इस गोल-गोल चमकीली चीज को खरीद लिया।

किम वापस अपने गाँव आ पहुँचा। नए-नए उपहारों से उसने अपनी पत्नी को लाद दिया। वह जो कुछ भी सियोल से खरीद लाया था, सभी कुछ अपनी पत्नी के हवाले कर दिया ? केवल वह गोल-गोल चमकीली चीज उसने अपने पास रहने दी। क्योंकि वह तो उसके पिता की तस्वीर थी। वह तो उसी के पास रहनी चाहिए थी। उसे सम्भाल कर उसने अपने सूट-केस में रख लिया।

दूसरे दिन जब वह अपनी चक्की पर काम करने चला गया तो उसकी स्त्री ने उसके सूट-केस को खोला और देखने लगी कि वह और क्या कुछ लाया है।

"अच्छा, यह बात ! वह तो दूसरी औरत ले आया है। शायद मुझे छोड़ देना चाहता है ! उस गोल और चमकीली चीज में देखते हुए उसने कहा। इसके बाद उसे लेकर वह अपनी सास के पास गई ताकि बेटे की करतूत माँ को भी मालूम हो जाए। चोर की तरह उसे भी उसमें अपना ही चेहरा दिखाई दिया। "मैं इस बुढ़िया को अपने घर में नहीं रहने दूँगी।" बुढ़िया चिल्लाई। "यहाँ अपना ही गुजारा मुश्किल से हो पाता है। इस बुढ़िया को कहाँ से खिलाएँ-पिलाएँ।"

दोपहर को जब किम आया तो उसकी पत्नि बाघनी की तरह उस पर बरस पड़ी। वह सख्त स्वभाव की औरत थी और आज ही उसका गुस्सा हद को पार कर गया था। वह अपने पति को खींचकर साथ ले कचहरी जा पहुँची।

वहाँ उसने अपने पति पर उसके रहते दूसरी स्त्री लाने और उसके कारण घर की शान्ति को नष्ट करने का मुकदमा किया। जज ने पूछा कि इसका क्या सबूत है कि वह दूसरी स्त्री लाया है ? उस ने वह गोल, चमकीला टुकड़ा सामने कर दिया।

देहाती यद्यपि इम्तहान के दिनों, कुछ दिन सियोल रहा था। परन्तु फिर भी उसने कभी शीशा नहीं देखा था। जब उसने शीशे को अपनी आँखों के सामने किया तो गुस्से के कारण डरावना दिखाई देने लगा।

सामने उसे जज की पोशाक पहने एक आदमी दिखाई दिया। उसे देखकर उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसकी जगह दूसरा जज आ गया है

और उसे काम से जवाब मिल जाएगा।

गुस्से के कारण उसके होंठ थरथराने लगे। मुँह से बात तक नहीं निकलती थी। कचहरी में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। इस समय चपरासी ने आकर बताया कि कचहरियों के बड़े इन्स्पेक्टर साहब जजों के काम की देख-रेख करने आ रहे हैं।

बड़े इन्स्पेक्टर साहब कचहरी में आ पहुँचे। अन्दर पहुँचते ही उन्होंने देखा कि जज साहब गुस्से में भरे बैठे हैं। पूछ-ताछ करने पर उन्हें सारी बात मालूम हो गई।

बड़े इन्स्पेक्टर साहब सियोल से आ रहे थे। वे शीशे का प्रयोग जानते थे। कचहरी में उस समय जितने लोग थे उन्होंने सभी को समझाया कि यह शीशा है। किम इसे सियोल से खरीद लाया होगा। इसमें उसी वस्तु का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है जो इसके सामने लाई जाय।

किम को उसमें अपना चेहरा दिखाई दिया। उसने समझा कि यह उसके स्वर्गीय पिता की तस्वीर है। क्योंकि उसका चेहरा अपने पिता से काफी मिलता था उसकी स्त्री ने देखा तो उसे एक स्त्री दिखाई दी। उसने समझा उसका पति उसके लिए सौत लाया है। बुढ़िया ने देखा तो उसे बुढ़िया दिखाई दी और यही हाल जज साहब का हुआ।

इन्स्पेक्टर साहब के बताने पर सभी अपनी-अपनी मूर्खता पर हँसने लगे। और वहाँ जितने लोग थे, हँस-हँस कर उन सबके पेट में बल पड़ गए।